Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on **“_ इतिहास में मेटरनिख का मूल्यांकन।"**

(for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)

इतिहास में मेटरनिख का मूल्यांकन ।

मेटरनिख ने सबसे पहले बड़ा काम यह किया कि उसने एक लम्बे अरसे तक यूरोप को शान्ति दी। नेपोलियन के युद्धों से लहूलुहान यूरोप को आराम और शान्ति को बड़ी जरूरत थी। मेटरनिख ने अपने कार्यकाल में इस बात की भरसक कोशिश की कि यूरोप में शान्ति बनी रहे। सन् 1815 ई0 के बाद 40 वर्षों तक यूरोप में जो शान्ति कायम रही, उसका श्रेय सही अर्थ में मेटरनिख को ही दिया जा सकता है, चाहे यह शान्ति बहुत महंगी पड़ी हो। मेटरनिख अपने समय का महान कूटनीतिज्ञ था। वह अपने समय में यूरोपीय राजनीति का केन्द्र था। पर प्रतिक्रियावादी और प्रगतिवादी शक्तियों के संघर्ष में प्रगतिवादी शक्तियों का, विजयी होना स्वाभाविक और निश्चित था। इसीलिए मेटरनिख का पतन हुआ। फिर भी 1815 ई0 से 1848 ई0 तक वह प्रतिक्रियावादी शक्तियों का आधार-स्तम्भ रहा। उसके पतन के बाद ही प्रतिक्रियावाद का महल ढह सका। मेटरनिख ने एक बार विख्यात कवि हीसिअड की तरह अपनी अवस्था पर दुःख

प्रकट करते हुए कहा था- "मैं इस संसार में या तो बहुत जल्दी या बहुत देर से आया हूँ क्योंकि जब मैं बूढ़ा होता जा रहा हूँ तो संसार का यौवन खिलता जा रहा है। यदि पहले से आया होता तो युग का आनन्द लेता और यदि देर से आया जोता तो उसके निर्माण मे सहायक होता।"

मैटरनिक के तमाम प्रयत्नों के बावजूद राष्ट्रवाद, उदारवाद और प्रजातंत्र की भावना ने यूरोप को प्रभावित कर दिया। वस्तुतः औद्योगीकरण तथा इसके फलस्वरूप सामाजिक परिवर्तनों ने मैटरनिक व्यवस्था के पतन को अवश्यभावी बना दिया। समृद्ध होता बुर्जुआ वर्ग मैटरनिक सरकार की पिछड़ी हुई आर्थिक नीति से अशांत हो उठा तथा श्रमिक वर्ग की कठिनाईयों ने मैटरनिक के 'लोहे के पर्दे' में छेद कर दिया। नया साहित्य चोरी छिपे आस्ट्रिया पहुंचने लगा था जिससे वहां राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग होने लगी। मैटरनिक के लाख प्रयासों के बावजूद हंगरी, बोहेमिया में रहने वाले जातियों में विद्रोह होने लगा। 1829 ई. में यूनान को स्वतंत्रता मिल गई और 1830 ई. में बेल्जियम हॉलैंड से स्वतंत्र हो गया। वह मैटरनिक व्यवस्था की बहुत

बड़ी विफलता थी क्योंकि इसमें राष्ट्रवाद की जीत हुई थी।

1848 की क्रांति के परिणामस्वरूप जब आस्ट्रिया में विद्रोह फैलने लगा और छात्रों, श्रमिकों पत्रकारों ने स्वतंत्रता प्रदान करने, सेंसर उठाए जाने की मांग की तो बूढ़ा मैटरनिक इन प्रदर्शनों से घबराकर वियना छोड़कर इंग्लैंड भाग गया। इसका कारण यह था कि प्रगतिशीलता की बयार को वह एक लंबे समय तक नहीं रोक सकता था। इस प्रकार देखते है कि मैटरनिक ने यूरोप में यथास्थिति बनाए रखने तथा राष्ट्रवाद, उदारवाद एवं प्रजातंत्र की भावनाओं को दूर रखने का प्रयास किया। लेकिन जनमानस में बैठ चुकी उदारवाद की भावना तथा परिवर्तन की आकांक्षा को रोक पाने में असफल रहा।

मेटरनिख की प्रतिक्रियापादी नीति अन्त में न तो आस्ट्रिया के हित में ही रही और न यूरोप के अन्य निरंकुश शासकों के हित में ही। यद्यपि वह आस्ट्रिया में निरंकुश राजतन्त्र बनाये रखने में सफल हुआ, पर उसकी नीति से आस्ट्रिया

को बड़ी हानि पहुंची। उसकी नीति के फलस्वरूप आस्ट्रिया यूरोप का एक पिछड़ा देश रह गया। सभ्यता के किसी भी क्षेत्र में वह प्रगति न कर सका। इसके विपरीत मध्य यूरोप में प्रशा प्रगति करता रहा। उन्नति, प्रगति और विकास की दौड़ में आस्ट्रिया इतनी बुरी तरह पिछड़ गया कि मेटरनिख के पतन के बाद यूरोप का नेतृत्व प्रशा के हाथ में आ गया। 1866 ई0 में आस्ट्रिया को प्रशा के हाथों पराजित होना पड़ा और जर्मनी छोड़ देना पड़ा। यदि मेटरनिख थोड़ा भी उदारवादी होता तो सम्भवतः आस्ट्रिया को ऐसे दुर्दिन न देखने पड़ते।

फिर भी हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि मेटरनिख आस्ट्रिया का चांसलर था, अतः यह आवश्यक था कि कि उसकी नीति आस्ट्रिया के हितों के अनुकूल हो। आस्ट्रियन साम्राज्य का कायम रखना उसका कर्त्तव्य था। आस्ट्रियन साम्राज्य विभिन्न जातियों का जमघट था और यदि मेटरनिख राष्ट्रीयता के सिद्धान्त को अपनाता तो इसका अर्थ साम्राज्य के विनाश को निमन्त्रण देना होता। अतः नवीन भावनाओं को कुलचना स्वाभाविक था। यदि मेटरनिख की जगह कोई अन्य व्यक्ति होता तो वह भी

सम्भवतः मेटरनिख के पद-चिन्हों पर ही चलता।
मेटरनिख का मूल्यांकन करते हुए प्रो॰ फिशर ने लिखा है- "मेटरनिख प्रणाली से आस्ट्रियन शासकों को एक पीढ़ी का यश प्राप्त हुआ। इन लोगों को उन दिनों युद्ध की कठिनाइयों का ही ज्ञान था। मेटरनिख में एक महान राजनीतिक नेता के अनेक गुण थे। वह तीव्र और आकर्षक बुद्धि का धनी, शान्त-चित्त, गहरी सूझ-बूझ और देशभक्त था। अपने देश के मुक्तिदता तथा नवीन यूरोप के निर्माता के रूप में उसका भारी सम्मान था। जर्मन भाषा-भाषी देशों को तो उसमें असीम विश्वास था। निरंकुश और स्वेच्छाचारी राजाओं के सम्मेलनों का वही संचालन करता था। अतः सन् 1815 से 1848 की अवधि को यदि 'मेटरनिख युग' कहा जाता है तो ठीक ही है। पर यह महान योग्य सामन्त, जिसका चरित्र इतना हीन, जिसके सिद्धान्त अत्यन्त कठोर और जिसका प्रभाव इतना सुविस्तृत था, एक बहुत बड़ी मानसिक दुर्बलता का शिकार था। उसने 'क्रान्ति' और 'स्वेच्छाचारी शासन' इन दो प्रणालियों के बीच कोई मार्ग खोजने की कोशिश नहीं की। चूंकि क्रान्ति से उसे अत्यन्त घृणा थी, अतः उसने इस भावना का, जिसे

समाज में मानवतापूर्ण जीवन की आत्मा अथवा स्वतन्त्रता का प्राण माना जा सकता है, दमन करने का बीड़ा उठाया।"

References: Internet & Competitive books.